भारत सरकार
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. **1922** जिसका उत्तर
शुक्रवार, 02 अगस्त, 2024/11 श्रावण, 1946 (शक) को दिया जाना है

भारतीय पत्तन का विकास

†1922. डॉ. प्रदीप कुमार पाणिग्रही :

क्या **पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार द्वारा पत्तन विकास क्षेत्र में अवसंरचना विकास, परिचालन दक्षता, विनियामक ढांचे, पर्यावरणीय स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता के संदर्भ में प्रमुख चुनौतियां क्या हैं; और

(ख) यदि हां, तो इन चुनौतियों का समाधान करने और भारत के पत्तनों और समुद्री क्षेत्र के विकास और आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए क्या रणनीतिक पहल और सुधार किए जा रहे हैं?

उत्तर
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री
(श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क): पत्तन विकास में सरकार द्वारा सामना की जा रही प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं:

(i) वित्तपोषण प्राप्त करना: बडे पैमाने की पत्तन अवसंरचना परियोजनाओं में प्राय: पर्याप्त निवेश की आवश्यकता पड़ती है जिसे प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण होता है।

(ii) भूमि अधिग्रहण में विलंब: पत्तन विस्तार के लिए अथवा नई परियेाजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण करने में विलंब परियोजना की समय सीमा को अत्यधिक प्रभावित करता है।

(iii) क्षमता संबंधी अवरोध: अनेक पत्तन, भौतिक, भौगोलिक और विनियमनकारी कारकों के कारण क्षमता के विस्तार में सीमितताओं का सामना करते हैं।

(iv) लॉजिस्टिक्स और संपर्कता अकुशलता: अकुशल लॉजिस्टिक्स और खराब संपर्कता, पत्तनों के प्रभावी प्रचालन में बाधा डाल सकती है।

(v): कार्यबल कौशल अंतर: उन्नत पत्तन प्रचालनों के लिए अपेक्षित कौशल स्तर बनाम उपलब्ध कार्यबल में प्राय: विसंगति होती है।

(ख): सरकार, दक्षता में सुधार करने के लिए विनियमों को सरलीकृत करने और अनुमोदन प्रक्रिया को कारगर बनाने पर ध्यान केन्द्रित करती है। सरकार ने प्रक्रियाओं को सरल और कारगर बनाने के लिए मल्टी एजेंसी समन्वय समीतियां गठित की है। सरकार प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार लाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम पद्धतियों और मानकों को अपना रही है। पत्तन विकास में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने और भारत के पत्तनों और मैरीटाइम क्षेत्र में वृद्धि और आधुनिकीकरण का पोषण करने के लिए भारत सरकार ने 2015 में सागरमाला कार्यक्रम की शुरूआत की जिसका उद्देश्य पत्तनों को आधुनिकृत करना, पत्तन संपर्कता में विस्तार करना और पत्तन आधारित औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना है। लॉजिस्टिक्स प्रचालनों को कारगर बनाने और आपूर्ति श्रृंखला की कुशलता में वृद्धि करने के लिए 2022 में राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति की शुरूआत की गई है।

अक्तूबर, 2023 में एमओपीएसडब्ल्यू द्वारा शुरू किए गए मैरीटाइम अमृतकाल विज़न, 2047, भारत के समुद्री क्षेत्र को रूपांतरित करने के लिए एक व्यापक योजना रेखांकित करता है। शामिल की गई प्रमुख पहलें निम्नानुसार है:

1. विश्व श्रेणी पत्तनों का विकास करना: उन्नत सुविधाओं और अवसंरचना के साथ अगली जेनरेशन के पत्तनों के सृजन पर ध्यान केन्द्रित करना।
2. पत्तन क्लस्टर: महापत्तनों और गैर महापत्तनों के लिए 300 मिलियन टन प्रतिवर्ष (एमटीपीए) से अधिक क्षमता के साथ क्लस्टर स्थापित करना ताकि कुशलता और संपर्कता में वृद्धि की जा सके।
3. अपेक्षाकृत गहरे डुबाव: बड़े जलयानों को स्थान प्रदान करने के लिए ड्राफ्ट गहराई में 18-23 मी. की वृद्धि करना और क्षमताओं की हैंडलिंग में सुधार करना।
4. ट्रांसशिपमेंट हब: वैश्विक पोत परिवहन यातायात में बड़े हिस्सेदारी को हासिल करने के लिए एक प्रमुख ट्रांसशिपमेंट हब का विकास करना।
5. नए महापत्तन: पत्तन अवसंरचना और क्षमताओं में विस्तार करने के लिए दो नए महापत्तनों का विकास।
6. जलयान प्रभारों में कमी करना: पत्तन प्रचालनों को अधिक लागत प्रभावी बनाने के लिए जलयान संबंधी प्रभारों में कमी करने संबंधी उपाय क्रियान्वित करना।
7. निजी क्षेत्र की भागीदारी: पीएम गति शक्ति- एनएमपी के तहत परियोजनाओं में निजी क्षेत्र को शामिल करने के लिए तथा दक्षता और निवेश में सुधार करने के लिए परिसंपत्ति मुद्रीकरण योजना को बढ़ावा देना।

*****